20-9-2001

अन्तिम सीन को देखने के लिए साहस के साथ अपनी अवस्था को साक्षी बनाओ

आज जब बाबा के पास वतन में गई तो सदा के प्रमाण बाबा मुस्कराते हुए मीठा मिलन मनाते, अपनी बांहों में समाते बोले कि बच्ची आपकी दुनिया में क्या हो रहा है, क्या समाचार लाई हो? तो मैंने मुस्कराया और कहा बाबा आप तो सब जानते ही हो कि आपकी पुरानी दुनिया में क्या हो रहा है और आप ही पुरानी को नया बनाने वाले हो। तो बाबा मुस्कराये और बोले कि बच्चे आप सब तैयार हो, आपकी माला बन गई है? मैंने कहा बाबा यह तो टीचर जानता है कि माला बन गई है या क्या है, हम तो माला का

मणका बनने का पुरुषार्थ करते हैं, तो बाबा ने कहा कि आप बन गई हो ? मैंने कहा, बाबा वर्तमान समय के अनुसार ड्रामा प्लैन अनुसार जितना बनना है उतना तो बन चुके हैं। तो बाबा मुस्कराया और कहा चतुराई से जवाब देती हो। मैंने कहा जानी जाननहार तो आप हो ना, बाबा बोले देखो बच्ची दुनिया में बहुत हलचल है। इतनी हलचल है कि हर एक के अन्दर बदले की भावना है, बहुत आवेश, गुस्सा है। लेकिन बाबा अभी बच्चों को समय दे रहा है। नहीं तो इतना गुस्सा है बस अभी करें। लेकिन बाबा उनको किसी-न-किसी बहाने से थमा रहा है क्योंकि अभी सबकी एक मत नहीं है, जब एक मत हो जायेगी तो परिवर्तन का अन्तिम कार्य शुरू हो जायेगा। बाबा यह बच्चों को समय दे रहा है, बच्चे सेवा में तो नम्बरवन हैं। बाबा सेवा में तो सफलता भी देता है और साथ-साथ एक बार मधुबन पहुँच जाते हैं, तो बाप के घर का अनुभव करके भी जाते हैं और यह भी महसूस करते हैं, यह स्थान अन्य स्थानों से भिन्न है। आप बच्चे स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो तो थोड़ा-बहुत स्वर्ग का मॉडल उनको दिखाई देता है। लेकिन बाबा ने कहा जैसे आप दूसरों को कहते हो ना कि आप ऐसे नहीं कहो कि कर लेंगे, देख लेंगे, हो जायेगा। ऐसे आप अपने से भी पूछो कि यह भाषा तो नहीं बोलते हो। आप भी समय के साथ-साथ अपनी भाषा, अपने पुरुषार्थ, अपनी अवस्था में भी परिवर्तन लाओ। और सेवा तो आप लोगों को इतनी मिलने वाली है और मिल रही है, जो आप रोकते हो कि थोड़े आओ। अगर आप गेट खोल दो तो सम्भाल नहीं सकेंगे। सेवा की इतनी बड़ी मार्जिन है जो आप थक जाओ लेकिन सेवा लेने वाले नहीं थकेंगे। दिन प्रतिदिन जितना लोगों का ताला खुलता जायेगा तो उनको भी टचिंग होगी अभी आपके पास तो क्यु लगने वाली है। वह तो तैयार हैं, आपको भी पूरा तैयार होना है। सबकी निगाहें आपकी तरफ हैं। आपका जीवन, आपके विचार, आपकी चलन उनके अन्दर परिवर्तन लायेगी। अभी थोड़ा परिवर्तन आता है फिर ठहर जाते हैं। वह आपका परिवर्तन देखते हैं, आपका परिवर्तन अविनाशी है या ऊपर-नीचे होता रहता

है। तो बाबा ने कहा अभी आप बच्चों को अपनी स्टेज अचल, अडोल, एकरस रखना है। समय के पहले अपने को तैयार कर लेना है। बच्चों को अपनी कमाई का, अपनी अवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखकर पुरुषार्थ करना है। अभी तो बहुत विचित्र-विचित्र सीन देखते रहेंगे। इसके लिए अपनी अवस्था साक्षी बनाओ। अन्तिम सीन देखने के लिए भी साहस चाहिए। यह सवाल न उठे क्यों, कैसे! यह होना ही है, सामना करने की शक्ति धारण करो।

फिर बाबा को भोग स्वीकार कराया और आज कई आत्माओं का भोग था। खास गोपीवल्लभ बहन का भोग था, तो उनको बाबा ने वतन में इमर्ज कर भोग खिलाया। और कहा कि देखो बच्ची, यह आदि से अब तक अनेक प्रकार की परिस्थितियां आते हुए भी अपनी स्वस्थिति में स्थित रह अपनी भी कमाई की, पुण्य की पूंजी जमा की और अन्य आत्माओं को भी आगे बढ़ाया। आज दादा गोपाल को भी खास याद किया था, बाबा ने उन्हें भी इमर्ज किया। दादा गोपाल ने कहा कि देखो बाबा ने मुझे समय से पहले सेवा का स्थान बदलकर दे दिया। लेकिन मुझे यह खुशी है कि सभी सेवा पर तत्पर हैं। कभी-कभी बाबा मुझे यह चैतन्य फुलवाड़ी दिखाता है तो मैं देखकर खुश होता हूँ कि यह फुलवाड़ी भी आगे बढ़ती जा रही है और काम तो बाबा का है, निमित्त कोई-न-कोई को बनाता है। तो सभी को मेरी याद-प्यार देना।

फिर बाबा ने सभी को याद-प्यार दिया और कहा कि जो भी विंग की सेवा चल रही हैं, सेवा में तो वृद्धि होती जा रही है लेकिन अभी साथ-साथ अपने पुरुषार्थ में, स्वउन्नति में भी वृद्धि करती चलो। ऐसे याद-प्यार लेते मैं वापस आ गई।